Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 13 ~ Issue 7 (July 2025) pp: 205-208
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

अनामिका की कविता में स्त्री-मुक्ति के विविध आयाम

डॉ. पूनम सूद
एसोसिएट प्रोफेसर
श्री वेंकटेश्वर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

(संदर्भ: जन्म ले रहा है एक नया पुरुष (कविता संग्रह), अनामिका, सम्पा. ऋत्विक भारतीय, प्रलेक प्रकाशन, नई दिल्ली 110044 प्रथम संस्करण, 2023)

समकालीन हिन्दी कविता में अपनी विशिष्ट एवं विलक्षण पहचान बनाने वाली अनामिका पिछले चार दशकों से निरंतर साहित्य साधना में संलग्न हैं। वे हिन्दी की इकलौती स्त्री रचनाकार हैं जिन्होंने एक साथ अनेक विधाओं (कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, डायरी एवं अनुवाद) में साहित्य सृजन करते हुए हिन्दी, अंग्रेजी और रूसी भाषा के पाठकों के बीच संवादधर्मी पुल बनाने का कार्य किया है। अनामिका हिन्दी कविता में साहित्य अकादेमी सम्मान प्राप्त करने वाली पहली महिला कवि हैं। सुधीश पचौरी अनामिका को "मीरा, महादेवी के बाद की तीसरी सबसे बड़ी कवयित्री"। मानते हैं। अब तक अनामिका के अनेक काव्य-संग्रह प्रकाशित हैं- शीतल स्पर्श एक धूप को (1975), गलत पते की चिट्ठी (1979), समय के शहर में (1990) बीजाक्षर (1993), अनुष्टप (1998), खुरदरी हथेलियां (2004), दूब-धान, (2005) कविता में औरत (2012), टोकरी में दिगन्त (2015), पानी को सब याद था (2019), वर्किंग वीमेंस हॉस्टल और अन्य कविताएं (2022) बंद रास्तों का सफर (2022)।

सर्वप्रथम स्त्री के सम्बन्ध में मुक्ति की अवधारणा हमें थेरियों के यहां मिलती हैं, किन्तु बुद्धकालीन थेरियों की मुक्ति आज की स्त्रियों से भिन्न मुक्ति थी। थेरियों की मुक्ति आध्यात्मिक मुक्ति थी साथ ही बौद्ध मठों के नियमों-विधानों के अनुसार ही अपने का ढालना होता था। फिर परिवार से मुक्त होकर थेरियों का थेरी के नियम अपनाने को विवश होना पड़ता था। किन्तु नई स्त्री की मुक्ति इसलिए भी भिन्न थी कि वे पिता-पति-पुत्र या परिवार से मुक्ति को मुक्ति नहीं मानती। बल्कि पुरुषों में स्त्री-दृष्टि विकसित करने पर बल देती हैं, वह अतिवाद का नाश करना चाहती हैं। लोभ-क्रोध-मोह-काम के उन्नयन पर बल देती है। हालांकि समय-समय पर मुक्ति की अवधारणा बदलती भी रही। मुक्ति की दुरुह अवधारणा को समझाती हुई अनामिका लिखती हैं, "आध्यात्मिक मुहाने से भले ही शुरू हुआ हो मुक्ति का निनाद, घाट-घाट का पानी पिलाती, घोलती-घुलाती अब इसकी धारा चलती है तो इसका पहला अर्थ, 'राजनीतिक दासता से मुक्ति होता है। पर वहां भी यह ठहरती नहीं, आर्थिक मुक्ति के जात-पांत-धार्मिक घेरों और जकड़नों से मुक्ति और अंततः देह-मुक्ति के प्रश्नों से सीधा आ जुड़ती है।2"

प्रस्तुत शोधालेख के अन्तर्गत हम अनामिका की कविताओं के आलोक में स्त्री मुक्ति के विविध आयामों को समझने और समझाने का प्रयास करेंगे।

अनामिका की साहित्यक यात्रा में विशेषकर कविताओं से गुजरते हुए अनेक स्त्रियां मिलती हैं जो मुक्ति को लेकर संघर्षरत दिखती हैं। हालांकि 'मुक्ति' शब्द अपने आप में व्यंजनार्थ रखता है। किन्तु स्त्री-मुक्ति सदियों से स्त्रियों के सम्बन्ध में लगायी गयी वर्जनाओं और निषेधाज्ञाओं से मुक्त करते हुए संवैधानिक मूल्य जैसे समता-स्वतंत्रता हर वर्ग, वर्ण, सम्प्रदाय की स्त्री को प्रदान करना है। स्त्री-मुक्ति अवसर और संसाधनों के सम्यक् बंटवारे पर बल देती है। उस पूर्वग्रहों से मुक्ति भी जो स्त्रियों के विकास में बाधक बनते हैं साथ ही जिसने स्त्री को दोयम दर्जे का बना दिया। जबकि स्त्रियों के सम्बंध में धर्मशास्त्र कहता है, "स्वतंत्रता सर्वत्र वर्जयते"3 स्त्री को स्वतंत्र न करने के पीछे की मंशा आज स्त्रियां भांप चुकी हैं, वे जान चुकी हैं कि स्त्रियों को स्वतंत्रता मिल जाने से उन्हें अवसर और संसाधन मिल जाएंगे, वे स्वावलंबी हो जाएंगी, और स्वावलंबी स्त्रियां भला क्यों किसी की पराधीनता स्वीकारेंगी?

सर्वप्रथम अनामिका स्त्री-मुक्ति को बहनापे से जोड़कर देखतीं हैं, "स्त्री समाज ऐसा समाज है जो वर्ग, नस्ल, राष्ट्र आदि संकुचित सीमाओं के पार जाता है और जहां कहीं दमन है चाहे जिस वर्ग, नस्ल, राष्ट्र आदि संकुचित सीमाओं के पार जाता है और जहां कहीं दमन है चाहे जिस वर्ग, जिस नस्ल, जिस आयु, जिस जाति की स्त्री त्रस्त है उसको अंकवार लेता है।"4। अनामिका के यहां स्त्रियों की दुनिया बस्ती हैं जहां हर वर्ग, वर्ण की स्त्री संघर्ष करती दिख जाएंगी। वे जान चुकी हैं कि सदियों से उनके साथ छल-कपट होता आया, उनके आगे कर्तव्यों की लम्बी फेहरिस्त रखी गयी, किन्तु अधिकारों की चर्चा कहीं नहीं की गई। वे अब जान चुकी हैं कि मानवाधिकारों के बिना स्त्री दोयम दर्जे की ही बनी रहेगी। इसलिए उनका सारा संघर्ष मानवाधिकारों के सम्यक् बंटवारे के साथ-साथ, गुणों, अवसरों और संसाधनों के सम्यक् बंटवारे को लेकर है।

अनामिका की कविताओं से गुजरते हुए स्त्री की एक बृहत्तर दुनिया मिलती है जिन्हें तीन कोटियों में विभक्त किया जा सकता है:

प्रथम साधारण और मध्यमवर्गीय स्त्रियां जिनमें 'स्त्रियाँ' 'पतिव्रता', 'अभ्यागत', 'चिट्ठी लिखती हुई औरत', 'टूटी-बिखरी पिटी हुई', 'खलनायकों की रूठी स्वकीयाएं', 'मौसियां', 'अनब्याही औरतें', 'एक औरत का पहला राजकीय प्रवास' जैसी कविताओं को रखा जा सकता है। इन स्त्रियों के दुःख साधारण और मध्यमवर्गीय स्त्रियों के दुःख हैं। जहां स्त्री स्वयं को पढ़े-समझे जाने की मांग करती है तो वह चाहती हैं कि उसके दुःख को सस्ता और दो टकिया न समझा जाए। वहीं 'अनब्याही औरतें' कविता में तो स्त्री को अपना मनचीता पुरुष कहीं दिखता ही नहीं इसलिए वह अनब्याही ही रहने का निर्णय लेती हैं। 'मौसियां' कविता में वर्तमान समय की अवसरवादिता पर